पदार्थों के प्रति राग कम हो : आचार्य महाश्रमण

बन्धनाऊ 24 नवज़्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने प्रात: 7.30 बजे छोटी सवाई गांव से विहार कर अपनी धवल सेना के साथ बन्धनाऊ गांव के राजकीय प्राथमिक विद्यालय में पहुंचे, आचार्य महाश्रमण ने विद्यालय प्रांगण में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि राग के समान कोई अग्नि नहीं है, जब मनुष्य में राग भाव पुष्ट होता है तो अतिक्रमण करने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और जो व्यक्ति विषयों पदार्थों का चिंतन करता है उसमें आसक्ति हो जाती है। इसी तरह द्वेष विभिन्न रूपों वाला भूत के समान है मनुष्य में द्वेष की भावना नहीं रहनी चाहिए एक दूसरे से द्वेष नहीं करना चाहिए जो दूसरों के प्रति मंगल भावना करता है उसका भला होता है।

आचार्य महाश्रमण ने मोह को जाल बनाते हुए कहा कि जिस तरह से हाथी दलदल में फंस जाता है उसी तरह मनुष्य मोह के दलदल में फंस जाता है। तृष्णा, आवेश, मोह छूट जाता है तो मनुष्य की साधना निर्मल हो जाती है।

बन्धनाऊ ग्रामवासियों को नशा न करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि गांव के लोग परस्पर शांति का जीवन जीयें, कषाय को कम करें, जीवन में जो बुराई है उसे छोड़ने का प्रयास करें। मनुष्य के जीवन में सज्जनता, धार्मिकता रहती है तो उसका जीवन सुखी होता है।

इस अवसर पर व्यवस्था समिति के सहमंत्री बजरंग सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी, महामंत्री रतन दुगड़ आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।